ओम् शांति। यह किसने कहा? अपन से प्रश्न पूछना है। ओम का अर्थ मनुष्यों ने अनेक प्रकार का बनाया है। बाप कहते हैं एक सेकेण्ड में बाप से वर्से के अधिकारी बन जाते हो। बच्चा पैदा हुआ और कहेंगे वारिस पैदा हुआ। फिर सगीर से बालिग होता है। यहाँ भी ऐसे है। बाबा को जाना–पहचाना और वर्से का मालिक बने। यहाँ तुम तो बड़े हो ही। आत्मा को बाप का परिचय मिला, बस सेकेण्ड में बाप का वर्सा। बच्चा पैदा होने से ही समझेंगे बाप की जयदाद का वर्सा पावेंगे। यह है बेहद का। बाप कहते हैं– हे बच्चे! आत्मा ने जाना बाप आया हुआ है। तुम बच्चे जानते हो, बाप से हम कल्प–2 यह राजधानी लेते हैं। जैसे कि सेकेण्ड में तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। ओम यानी अहम्। मैं आत्मा, यह मेरा शरीर। मैं आत्मा किसका बच्चा है? परमात्मा का। बाप भी कहते हैं ओम। मैं परम आत्मा हूँ। मुझे अपना शरीर नहीं है। कितनी सहज बात है। वो समझते हैं ओम यानी भगवान। तो सब भगवान हो गए। भगवान तो है ही एक। वो कहते हैं हम तुम्हारा बाप हूँ। परम आत्मा यानी परमात्मा, जिसको सारी दुनिया पुकारती है– हे पतित–पावन! ऐसे कोई भी नहीं कहेंगे कि प०पि०प० की आत्मा मेरे द्वारा तुमको राजयोग सिखला रही है। किसको पता ही नहीं है। ना मालूम होने कारण कृष्ण भगवान का नाम लिख दिया है। उसने राजयोग सिखाया वा पतित से पावन बनाया। वास्तव में कृष्ण को पतित–पावन कह नहीं सकते। वो तो है स्वर्ग का पहला बच्चा। जो पहले है पिछाड़ी में भी वो ही होगा। इसलिए उनको ही श्याम–सुंदर कहते हैं। पहले नम्बर में है कृष्ण। फिर 84 जन्म के बाद उनका नाम ब्रह्मा एडॉप्टेड होता है। बाप आकर बच्चों को एडॉप्टेड करते हैं। तुम एडॉप्टेड बच्चे हो ईश्वर के, तो तुम्हारी माँ भी है, बाप भी है। प्रजापिता भी है। फिर बाप कहते हैं, इनके मुख से कहता हूँ तुम मेरे बच्चे हो। तुम कहते हो– बाबा, हम आपके हैं। आप से वर्सा लेने आए हैं। बुद्धि भी कहती है बाप आता ज़रूर है। कब आते हैं? यह भी विचार की बात है ना। कहते हैं, पतित–पावन आओ। तो ज़रूर जब पतित दुनिया का अंत हो तब तो आवेंगे ना। इसको कहा जाता है कल्प का अंत और आदि का संगम। अन्त में सब पतित हैं। आदि में सब पावन हैं। अंत में पतित दुनिया का विनाश होता है और पावन दुनिया की स्थापना होती है। फिर वृद्धि को पाते जाते हैं। गाया भी जाता है ब्रह्मा द्वारा स्थापना...। यह हैं त्रिमूर्ति। तुम जानते हो, शिवबाबा के सब बच्चे ब्रदर्स हैं। फिर जब रचना होती है तो भाई–बहन बनते हैं। मात–पिता क्यों कहते हो? भविष्य वर्सा लेने लिए। लौकिक वर्सा होते हुए पारलौकिक वर्सा पाने तुम पुरुषार्थ करते हो। यह है कलियुग, मृत्युलोक। सतयुग को अमरलोक कहते हैं। यहाँ तो मनुष्य अकाले मर पड़ते हैं। सतयुग है दैवी दुनिया। आदि सनातन देवी–देवता धर्म रहता है। हिन्दू धर्म तो है नहीं। आदमशुमारी जब निकालते हैं तो पूछते हैं आप किस धर्म के हो। हम कहते हैं हम ब्राह्मण धर्म के हैं। तो वह लोग हिन्दू धर्म में लगा देंगे; क्योंकि वह ब्राह्मण भी हिन्दू धर्म में आ जाते। आर्य समाजी आदि जो भी हैं सबको हिन्दू धर्म में लगा दिया है। वास्तव में हिन्दू धर्म तो है नहीं। यूरोप में रहने वाले को यूरोपियन धर्म थोड़े ही कहेंगे। धर्म तो क्रिश्चियन है ना। क्राइस्ट से क्रिश्चियन धर्म स्थापन हुआ। तो बाप कहते हैं कितने इडीयट हैं। पूछा जाता है हिन्दू धर्म किसने स्थापन किया, तो बिचारे मूँझ पड़ते हैं। कहते हैं, गीता द्वारा स्थापन हुआ। तो समझाया जाता है, गीता से आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना हुई। तुम तो देवता धर्म के हो। तो कहते हैं देवताएँ तो बहुत पवित्र थे, हम पतित हैं। हम अपन को देवता कैसे कहलावें! फिर समझाया जाता है– अच्छा, अब पवित्र बनो। फिर से देवी–देवता धर्म में आ जा(ओ)। तो कहते हैं, फुर्सत कहाँ! आपकी तो यह बहुत नई बातें हैं। बरोबर वास्तव

में हम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हैं। पूजते भी भारतवासी देवी–देवताओं को हैं। जैसे क्रिश्चियन क्राइस्ट को पूजते हैं; परन्तु पतित होने कारण अपन को देवता कहला नहीं सकते। अच्छा, पावन आकर बनो। तो कहते, फुर्सत नहीं। बाप कहते हैं तुम तो ऊँट पक्षी हो। पूछा जाता है, तुम देवता क्यों नहीं कहलाते? तो कहते, हम पतित हैं। अच्छा, पतित से पावन बनो, तो कहते हो फुर्सत नहीं। ऊँट पक्षी को बोलो, उड़ो तो कहेगा, मुझे पंख नहीं, ऊँट हूँ। बोलो, अच्छा, समान उठाओ तो कहेगा हम पक्षी हैं। तो बाप भी कहते हैं देवता बनो। माया ने पवित्रता के पर काट दिए हैं। समझते नहीं हैं। सावन के महीने में शिव की पूजा करते हैं, व्रत रखते हैं। तुम्हारे लिए सावन है ज्ञान बरसात का। तुम व्रत रखते हो पवित्र बनने का। जां जिएँगे पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। मनुष्य फिर व्रत रखते हैं भोजन ना खाने का। बाप कहते हैं विख ना पिओ। तो इसपर भी समझाना पड़ेगा। शिव को बहुत पूजते हैं। शिवबाबा कहते हैं पवित्रता का व्रत रखो। मैं आया हूँ फिर से पवित्र देवी–देवता धर्म स्थापन करने। यहाँ तो पावन कोई है नहीं। पावन देवी–देवताएँ होते हैं। सतयुग में वह विख से पैदा नहीं होते। नहीं तो उनको सम्पूर्ण निर्विकारी क्यों कहते? ल०ना०, श्री कृष्ण आदि को कहते ही है सम्पूर्ण निर्विकारी। यहाँ यह तो पतित हैं, जिनमें कोई गुण नहीं है। अपन लिए कहते हैं– हम पापी, नीच हैं। बाप कहते हैं मेरी मत पर अब तुम सम्पूर्ण निर्विकारी बनो तो तुम ऐसे (ल०ना०) मालिक बनोगे। तुम्हारी पढ़ाई कितनी भारी है। मनुष्य से देवता बनने का पुरुषार्थ कर विश्व का मालिक बनना है। सतयुग आदि में देवी–देवताओं का राज्य था ना। अब फिर से देवी–देवता धर्म की स्थापना हो रही है। तुम पवित्र बन स्वर्ग का वर्सा लेते हो। स्व यानी आत्मा। आत्मा को राजाई मिलती है। उनको स्वराज्य कहा जाता है। मनुष्य है देह–अभिमानी। देह–अभिमान से कहते हैं हमारा राज्य है। यहाँ तुम अपन को आत्मा समझते हो। आत्मा कहती है हम इस शरीर के मालिक हैं। हम महाराजा बनेंगे। मुझे सतयुग में पवित्र शरीर मिलेगा। अभी पतित हैं। जैसी आत्मा वैसा शरीर। आत्मा में खाद पड़ी हुई है। पहले तुम आत्मा पवित्र सच्चा सेना थे। गोल्डन एज कहा जाता था। फिर त्रेता आया तो सिलवर की खाद पड़ी। फिर द्वापर में गए तो ताँबा पड़ा। सोने को हल्का करने लिए मिलाया जाता है। कलियुग आया फिर लोहा पड़ा। इस समय आत्मा भी झूठी तो शरीर भी झूठा है। इसको कहा ही जाता है झूठ खण्ड। सतयुग है सच खण्ड। अभी बाप के साथ योग रखने से अलॉय निकल जाती है। इसको योग अग्नि कहा जाता है। पुराने जेवर से किचड़ा निकालने आग में डालते हैं। यह भी योग अग्नि है जिसमें खाद भस्म हो और हम सच्चा सोना बन बाप के साथ चले जावेंगे। बाप कहते हैं तुम मेरे साथ चल पड़ेंगे। सतयुग में सच्चा सोना मिलेगा। अब कृष्ण को सांवरा क्यों कहते हैं? कृष्ण का नाम–रूप तो बदल जाता है। तो बाप समझाते हैं, तुम गोरे थे फिर तुम्हारे में खाद पड़ी है। अभी बिल्कुल आयरन एज बन पड़े हो। अब मैं सोनार हूँ। सबको भट्ठी भी डाल देता हूँ। भंभोर को आग लगेगी, सबके शरीर खतम हो जावेंगे। आत्मा तो अविनाशी है। एक तो योग अग्नि से पवित्र बन जावेंगे। बाकी सब सज़ाएँ खाकर हिसाब–किताब चुक्तू कर जावेंगे। यह ईश्वर की भट्ठी है सबको पावन बनाने लिए। बाप है ज्ञान का सागर। उनसे तुम ज्ञान गंगाएँ निकली हो। मनुष्यों ने उस पानी की गंगा को समझ लिया है। वहाँ देवता की मूर्ति भी रखी है। वास्तव में हो तुम। भगवान के बच्चे ज्ञान गंगाएँ, जो फिर देवता बनते हो। जब स्वर्ग में आवेंगे तब देवता कहेंगे। वहाँ आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होंगे। अभी पतित है। भारत गोल्डन एज्ड था, फिर सिलवर, कॉपर, आयरन एज्ड बना है। अभी बाप फिर गोल्डन एज में ले जाते हैं। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हो जाते हैं। सोना 14 कैरेट हो(गा) तो जेवर भी ऐसा बनेगा। खाद डालने से 20 कैरेट, 14 कैरेट, 9 कैरेट भी हो जाते हैं। तो आत्मा (में) भी दिन–प्रतिदिन खाद पड़ती जाती है। पतित बनती जाती है। तो उनको पवित्र बनाना पड़े ना। बाप कहते हैं मैं सोनार

भी हूँ, धोबी भी हूँ। योगबल से तुम्हारी आत्मा को धोने आता हूँ। सिर्फ बाप को याद करना है, बस। (याद) में रहने से तुम विश्व के मालिक बन सकते हो। बाहुबल वाले विश्व के मालिक बन ना सके। हाँ, उन्हों में इतनी ताकत है, अगर यह क्रिश्चियन भाई आपस में मिल जाएँ तो विश्व के मालिक बन सकते हैं; परन्तु लॉ नहीं कहता है। कहानी भी है दो बिल्ले लड़े, माखन बंदर खा गया। तो वो लड़ते हैं बीच में माखन भारत को मिल जाता। इसमें नम्बर वन है श्री कृष्ण; इसलिए कृष्ण के मुख में माखन का गोला दिखाते हैं। वो माखन नहीं। यह स्वर्ग का राजभाग कृष्ण को मिल जाता है। बाप समझाते हैं वो लोग आपस में लड़कर भारत के मालिक बने हैं। अब फिर वसूल कर रहे हो। उन्हों को मिलना थोड़े ही है। विनाश हो जावेगा फिर तुम मालिक बन जावेंगे। इनसे पहले बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। श्रीमत से श्रेष्ठ, आसुरी मत से भ्रष्ट बनते हो। यह है आसुरी, पतित दुनिया। एक भी पावन नहीं। पावन दुनिया में फिर एक भी पतित नहीं होता। अभी सब पतित हैं। गाते भी हैं पतित–पावन सीता–राम। हम सीताएँ जो रावण की जेल में पड़ी हैं– हे राम, आकर छुड़ाओ। पावन दुनिया में हमको ले चलो। गाते हैं; परन्तु जानते कुछ भी नहीं। जो आया सो कहते रहते। रावण ने बिल्कुल ही सुला दिया है। अब बाप आकर जगाते हैं। प०पि०प० जो सृष्टि का रचयिता है उनकी बायोग्राफी को हम जानते हैं। ब्र०वि०शं०, ल०ना० उनकी बायोग्राफी को जानते हैं। ल०ना० के 84 जन्मों को जानते हैं। तो नॉलेजफुल बन गए ना। तुम कृष्ण के मंदिर में जावेंगे तो समझेंगे यह सतयुग का पहला प्रिंस था। अभी अंतिम 84वीं जन्म में ब्रह्मा–सरस्वती हैं। दिलवाला मंदिर में भी नीचे काले चित्र, ऊपर में गोरे चित्र दिखाए हैं। यह सच्चा–2 यादगार है। नीचे तपस्या में बैठे हैं, ऊपर में है प्रालब्ध। अभी तो यह नर्क है ना। जब कोई मरते हैं तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। जैसे नेहरू मरा तो लिखते हैं स्वर्ग पधारा। तो बच्चे उनको चिट्ठी लिखते हैं, अगर वह स्वर्ग गया फिर तुम ब्राह्मण क्यों खिलाते हो? उनको स्वर्ग में तो बहुत वैभव मिलते होंगे। तुम नीचे नर्क में मँगाए नर्क की चीज़ें क्यों खिलाते हो? परन्तु समझते नहीं हैं। कितना अंधकार है। बाप बच्चों को समझाते हैं खबरदार रहना। किसको भी दुख ना देना, नहीं तो दुखी हो मरेंगे। बाप तो दुख हर्ता, सुख कर्ता है ना। तुम भी 5 विकारों का दान देते हो। दे दान तो छूटे ग्रहण। ग्रहण लगता है तो फकीर लोग कहते हैं दे दान...। अब बाप कहते हैं– लाडले बच्चे, 5 विकारों का दान दो तो तुम सर्वगुण सम्पन्न देवता बन जावेंगे। दुख का ग्रहण छूट तुम सुखधाम के मालिक बन जावेंगे। इसलिए 5 विकारों का दान लिया जाता है। यह तो अच्छा है ना। अभी तुम्हारे ऊपर विकारों का ग्रहण लगने से काले बन पड़े हो। हम तुम्हारे विकार ही माँगते है। और कुछ नहीं। बाप समझाते हैं तुम बच्चों को आत्म–अभिमानी बनना है। मैं सेठ हूँ, फलाना हूँ, यह भूल जाना है। मैं आत्मा हूँ। आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करना है। वर्सा उनसे मिलता है। इसलिए देही–अभिमानी बनो। देवताएँ आत्म–अभिमानी हैं। जानते हैं हम एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेंगे। फिर आधा कल्प देह–अभिमानी बने हैं। अपन को आत्मा समझेंगे तो बाप याद आवेगा। देह समझेंगे तो लौकिक बाप याद आवेगा और पाप बनेंगे। मुझ बाप को याद करने से तुम्हारे पाप भस्म होंगे। हम रक्षा करेंगे। याद ही ना करेंगे तो रक्षा कैसे करूँगा। यह बातें कोई शास्त्रों आदि में नहीं हैं। वो है भक्तिमार्ग की सामग्री दुर्गति में जाने की। बाप सद्गति में ले जाने पढ़ाते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक बाप है। प०पि०प० इस ब्रह्मा द्वारा सभी शास्त्रों आदि का सार बैठ समझाते हैं। कहते हैं जो कुछ पढ़ा है सब भूल जाओ। अब मुझ एक से सुनो। मैं इस शरीर द्वारा तुमको सुनाता हूँ। यह मेरा शरीर नहीं। यह तो पुरानी जूती है। लोन लिया है। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। पहले नम्बर का पावन यह था। फिर पिछाड़ी में पतित भी यह बना है। इसलिए इनमें प्रवेश कर फिर पावन बनाता हूँ। कितना अच्छी रीत समझाते हैं। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ